P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika
E: ISSN NO.: 2349-980X Vol-III* Issue-XII*August-2016

21वीं सदी के उभरते परिदृश्य में रामचरितमानस का औचित्य और राम का वनगमन एक विश्लेषण

अमित शुक्ल
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय,
रीवा,मध्य प्रदेश

सारांश

रामचरितमानस हिन्दी साहित्य ही नही विश्व साहित्य की एक अमूल्य निधि है। 21 वीं सदी के वर्तमान समय के बदलते पारिवारिक, सामाजिक, परिवेश में रामचरितमानस का महत्व और भी बढ़ गया है। रामचरितमानस आर्शीवादात्मक ग्रन्थ है। इसका प्रत्येक काण्ड भारतीय संस्कृति का आईना है, जिसमें भारत की तस्वीर उभरती है, और सम्पूर्ण विश्वसाहित्य को प्रेरणा देती है। देखा जाय तो भक्ति, ज्ञान, नीति, सदाचार का प्रचार ,प्रसार जनता में जितना इस ग्रन्थ से हुआ उतना किसी और ग्रन्थ में नही। तुलसीदास जी का रामचरितमानस अवधी मे लिखा हिन्दी का सर्वोत्कृष्ट महाकाव्य है। काव्य कौशल व कला सौंदर्य की दृष्टि से रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है, इसका कथानक विभिन्न– विभिन्न भागों में विभक्त है। राम का वनगमन रामचिरतमानस मे विभक्त अनेक काण्डों में से एक महत्वपूर्ण, अविस्मरणीय, रोचक व प्रभावशाली घटनाओं का क्रम है। जो घूम फिरकर राम को वापस राज्यगद्दी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यह एक ऐसा धर्मिक ग्रन्थ है, जिसमे राम की भक्ति की प्रतिष्ठा की गयी है। राम का वनगमन राम की दशा व दिशा को निर्धारित करता है।

मुख्य शब्द : रामचरितमानस, राम, वनगमन, विश्वसाहित्य, महाकाव्य, हिन्दी साहित्य, सीता, रावण, राजगद्दी।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का आईना रामचरितमानस का कथानक पूर्ण व्यवस्थित व संगठित है। प्रबन्ध पटुता, उदभावना, भक्ति के साथ –साथ उन्नत रचना कौशल,मार्मिक स्थलों का सरस निरूपण, प्रभावोत्पादकता, भाव व्यंजन, मर्मस्पर्शी संवाद, उत्कृष्टशील निरूपण,, सरस एवं सुबोध भाषा , संतुलित अलंकार योजना , भावानुकूल छन्द विधान, आदि के दर्शन रामचरित मानस में होते हैं, जो उसे विश्वसाहित्य की ओर एक अलग ही पहचान देते हैं। काव्य कौशल व कला सौंदर्य की दृष्टि से रामचरितमानस हिन्दी साहित्य का सर्वश्रेष्ठ महाकाव्य है, इसका कथानक विभिन्न–विभिन्न भागों में विभक्त है। इस कथानक में रामजन्म से लेकर राम वन गमन तक की घटनायें कथानक के प्रारंभिक भाग से संबधित हैं। वन गमन लेकर सीता हरण तक की घटनाएं कथा के मध्य से संबधित हैं और सीता हरण से लेकर रावण बध तक की कथा का अवसान हैं।[1]

उद्देश्य व महत्व

रामचरितमानस के कथानक में, राम का वनगमन एक महत्वपूर्ण घटना के रूप मे सामने आता है। कैकेयी को दिए वचनों के कारण श्रीराम वन की ओर जाने को उन्मुख हुए। अयोध्यावासियों के विरोंध के बावजूद उन्होंने पिता दशरथ के वचन का पालन करने के लिए वन की ओर निकल पड़े। इस वनगमन मे उन्हे अनेक बाधाओं का सामना करना पड़ा। पिता राजा दशरथ की आज्ञा के फलस्वरूप श्री राम ने अपने राजसी वस्त्र का त्याग कर आभूषणो का उतारा उस समय का दृश्य अदभुत् था। वे अयोध्या के स्त्री पुरूषों का मोह त्याग एक सामान्य यात्री की तरह वनगमन की ओर चल पड़े। राम का वनगमन उनके सौंदर्य का प्रतीक रहा तों राहगीरों की चर्चा का केन्द्र भी । रामचरितमानस के लेखक तुलसीदास ने राम के वन मार्ग पर चलते हुए उनके सौदर्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि राम वनमार्ग पर चलते– चलते एक नए उगे हुए वृक्ष की डाली का सहारा लेकर खड़े हुए तो उनका धनुष उनके कंधे पर और बाण उनके हाथ में, उस समय उनकी आखें बड़ी–बड़ी व भंव आदि अत्यंत सुंदर लग रहे थे। उनके गालों का सौंदर्य भी श्रम के कारण उस क्षण अत्यंत मोहक प्रतीत हो रहा था। उनके इस सौंदर्य को वन के रास्तों पर चलते हुए सांवले रंग रूप वाले राम के पीछे –पीछे लक्ष्मण सुंदर वस्त्र धारण किये हुए मनमोहक प्रतीत हो रहे। वो राहगीर और जनता के मन मस्तिष्क में बस जाते हैं।राम का रंग और

सौंदर्य लोंगों के आकर्षण का केन्द्र रहा। वन मार्ग होते हुए जब राम ग्रामीण अंचल की ओर गुजरते हैं तो वहां की ग्रामीण महिलाओं की आपसी बातचीत से एक अलग ही वातावरण निर्मित हो जाता है। वे कहती हैं कि राम वनगमन की कहानी जानकर मुझे ये बात समझ आती है कि रानी कैकेयी अज्ञानी है उसका ह्रदय वज्र और पत्थर सा कठोर है। उनका ये भी कहना कि राजा ने चौदह वर्ष के वनवास की आज्ञा देकर कोई बुद्धिमानी का परिचय नही दिया है। जो लोग आखों मे बसाने लायक हैं उन्हें वनवास की आज्ञा देना उचित नही। इस प्रकार वन मार्ग के इतने पड़ावों में जनश्रुति का आक्रोश भी दृष्टिगत हुआ, जो स्वाभाविक था। वन की ओर जाने पर पहला विश्राम तमसा और दूसरा विश्राम गोमती के तट पर किया और फिर श्रृंगवेर की ओर पहुंकर गंगा को प्रणाम कर स्नान किया। जब निषादराज को ये सूचना प्राप्त हुई कि श्री राम वहां आये हुए हैं तो वह अपने परिवार सहित राम से मिलने अपार हर्ष के साथ फल वगैरह लेकर उनकी ओर गए। और उन्हे देख अपने को धन्य माना। राम के वनगमन को लेकर जनता के बीच अनेक प्रतिक्रियाएं हुई। कुछ ने कैकेयी पर आरोप लगाये और कुछ ने दशरथ पर। वनगमन के अनेक पड़ाव के बीच जब राम ने गंगा मे केवट से गंगा पार कराने को कहा तो केवट ने कहा कि आपके चरणों को छूकर जब पत्थर की शिला स्त्री हो गयी तो मेरी नाव तो लकड़ी की है, मै आपके चरणों को धोये बिना अपनी नाव पर नही बैठाउंगा,[2] इस प्रकार चरण धोकर केवट ने श्रीराम को गंगा पार कराया। और केवट के कुछ न लेने पर उसे निर्मल भक्ति का वरदान दिया। वनमार्ग के आगे का मार्ग तय करते हुए राम, सीता और लक्ष्मण आगे बढ़े। राम के चरण चिन्हों मे बीच –बीच में पैर रखती हुई सीता डरती हुई मार्ग में चलती जा रही हैं और लक्ष्मण सीता व राम जी के चरण चिन्हों को बचाते हुए मार्ग बनाकर ऐसे चल रहें हैं कि उनमे वो छू न जाए। राम लक्ष्मण और सीता जी प्रीति भरी छवि को देख इंसान तों क्या देख पशु– पक्षी भी अत्यंत मोहित हो गए। वन मार्ग के अनेक दुर्गम मार्गों का रास्ता तय कर जा रहे थे तभी श्रीराम जी को ये लगा कि सीता जी बहुत थक गयी हैं तो वन में एक बड़ा वृक्ष और ठंडा पानी देखकर विश्राम किया व प्रातःकाल स्नान कर जब आगे की ओर प्रस्थान किया तो सुन्दर वन, तालाब और पर्वत के अद्भुत सौंदर्य के दर्शन करते हुए वाल्मिकि आश्रम पहुंचे। पर्वत, वन, पवित्र जल, सरोवर के कमल, वनों के हरे–भरे वृक्ष व फल–फूल देख हर्षित व पुलकित हो अत्यंत प्रसन्नता व्यक्त की। राम के आगमन का संदेश पाकर वाल्मिकि जी को अपार प्रसन्नता हुई और वो उन्हें लेने आगे बढ़े। राम ने उन्हें दण्डवत किया, वाल्मिकि जी ने आर्शीवाद दिया। वाल्मिकि और राम के बीच अनेक अमृत वाणी के विचार विमर्श के उपरान्त उन्हें रहने के लिए प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर निवास स्थान बताया। वाल्मीकि ने कहा कि बहुत से श्रेष्ठ मुनि वहां निवास करते हैं जो योग, जप और तप करते हुए शरीर को कसते हैं, वाल्मिकि जी ने कहा कि परिश्रम को सफल कर आप पर्वत श्रेष्ठ चित्रकूट गौरव दीजिए। अनेक घाट, नदी, नाला आदि के अवलोकन के पश्चात् भीलों के वेश में देवताओं ने उनके लिए अत्यंत सुंदर दो कुटिया एक बड़ी वा छोटी बनाई। फूलों की वर्षा से अनेक देवताओं ने राम का स्वागत किया। चित्रकूट का एक और प्रसंग अविस्मरणीय है जो भरत को लेकर है। राम वनगमन के पश्चात् जब भरत को ये जानकारी प्राप्त होती है कि मुझे राजगद्दी देने के लिए बड़े भाई श्री राम को मां कैकेयी ने चौदह वर्ष का वनवास करवा दिया है तो वो अत्यंत दुखी हुए, और राम को मनाने वन की ओर चल दिए। उस समय का दृश्य अत्यंत मर्मस्पर्शी व भावुकता से ओतप्रोत है। राम को खोजते हुए वो जब चित्रकूट पहुंचे तो राम से मिल अत्यंत भावविभोर हो गए , उनकी खुशी का ठिकाना नही रहा। राम बड़ी ही आत्मीयता से भरत को अपने गले लगा लिया। भरत कहा कि भाई वापस अयोध्या लिए और राजगददी संभालिए। तब राम ने कहा भरत तुम जाओ और गददी पर बैठ प्रजा का ध्यान रखो। भरत की कोशिश के बावजूद राम वाप नही गए। तब अत्यंत भारी मन से भरत वापस अयोध्या गए और राजगद्दी में ही राम की चरण पादुका स्थापित कर अयोध्या से बाहर एक कुटी बनाकर चौदह वर्ष तक निवास किया ये एक भाई के प्रेम और स्नेह की पराकाष्ठा है जो आज की भारतीय जनता के लिए प्रेरणाप्रद हैं।[3] राम अगस्त मुनि, जटायु से मिलते हुए पंचवटी में की ओर पहुंचे। वहां की महत्वपूर्ण घटना जो अचम्भित कर देती है। वो राम, लक्ष्मण के बीच हुए संवाद और भविष्य की अनेक घटनाओं को जन्म देने के कारण बने। पंचवटी की ये घटना शूर्पणखा को लेकर है जो राम को देखकर मोहित हो जाती है और विवाह प्रस्ताव रखती है। उसे समझाने पर भी जब वह नही मानती तो लक्ष्मण के द्वारा उसके नाक – कान काट लिये जाते हैं। यह घटना आगे चलकर अनेक विवादों को जन्म देती है। इस घटना से क्रोधित अनेक राक्षस राम पर हमला करते है। जिसके परिणाम स्वरूप अनेक राक्षस मारे जाते हैं। पचंवटी का एक दृश्य अत्यंत आकर्षित करता है। पंचवटी की कुटिया मे राम का सौंदर्य अत्यंत निखरा हुआ है। उनके पास सीता और लक्ष्मण बैठे हुये सुशोभित को रहे हैं। उनके सभी अंग अत्यंत सजीव, सुन्दर और आकर्षक थे। उनकी ये सुन्दरता वहां अलग ही दिखाई दे रही थी। उसी समय एक महत्वपूर्ण घटना ने वहां का रूख ही बदल दिया। वहां स्वर्णमृग के रूप मे मारीच पहुंचे, उस स्वर्णमृग को देख सीता ने राम से उसे पकड़ने की जिद करने लगीं। और राम सीता के वचनो का पालन करने के लिए उस स्वर्णमृग के पीछे चल दिए। राम के वनगमन की सबसे महत्वपूर्ण घटना यही है जब उस स्वर्णमृग को पकड़ने के उद्देश्य से गए श्री राम को खोजने सीता को जाना पड़ा और लक्ष्मण द्वारा खींची गयी लक्ष्मण रेखा को उन्होंने पार किया, जो उनके हरण का मुख्य कारण बनी। राम वनगमन के पंचवटी का ये पड़ाव भविष्य की अनेक घटनाओं का महत्वपूर्ण कारण बना। जो रावण के अंत की ओर संकेत करता है। वन में कंद मूल व फल खाते हुए पत्तों की सैयया पर सोते हुए राम ने जहां एक ओर साधु–संतों का उद्धार किया वहीं राक्षसों का वध कर उनके आतंक से लोंगों को उन्होने मुक्त किया। राम मारीच को मारकर जब पंचवटी मे पहुंचे तो उन्हे ये मालुम हुआ कि सीता का हरण हो चुका है तब वो व्याकुल हो उनकी खोजबीन मे लग गये।[4] तब रास्ते मे घायल उन्हे जटायु से भेट हुई । जटायु से उन्हे मालुम

हुआ कि सीता को रावण उठा ले गया है। राम वनगमन के इस महत्वपूर्ण घटना चक्र में जटायु का अंतिम संस्कार कर आगे बढ़े, जहां उन्हें शबरी की भक्ति और प्रेम ने अत्यंत प्रभावित किया वे उनके जूठे और मीठे अमृत फल बैर का रसास्वादन किया, और आगे बढे आगे किष्किंधा पर्वत पर हनुमान व सुग्रीव जी से मित्रता हुई यहीं पर उन्होंने बाली का वध कर सुग्रीव को किष्किंधा का राजा बनाया। उसके बाद सुग्रीव के कहने पर हनुमान, अंगद सहित सभी वानर सेना सीता की खोज करने आगे बड़े। इस प्रकार राम का वनगमन सीताहरण के पष्चात् अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं को जन्म देता चला गया जो अयोध्या और वहां की जनता के बीच एक नये रामराज्य की ओर संकेत करता है। सीता की खोज, और रावण व राक्षसों के वध के लिए हनुमान और उनकी वानर सेना ने मिलकर राम का सहयोग किया। हनुमान जी ने लंका में लंकनी नामक राक्षसी को मारकर किले मे प्रवेश किया। वहां रामभक्त विभीषण उन्होंने भेंट कर आगे की कार्य योजना बनायी और सीता जी के दर्शन कर अत्यंत प्रसन्न हो उन्हें अंगूठी प्रदान की। वहीं सीता जी ने भी हनुमान जी को राम को देने के लिए चूड़ामणि दी । राम वनगमन के इस ऐतिहासिक मोड़ पे राम ने जब सीता द्वारा प्रदत्त चूड़ामणि देखी तो उनके नैनों से खुशी के आंसू छलक आए। वनमार्ग के प्रत्येक पथ पर कदम से कदम मिलाकर चलने वाली सीता का पंचवटी हरण के पश्चात् उनकी यादगार में हनुमान जी द्वारा चूड़ामणि प्राप्त करने का यह दृश्य अत्यंत भावुकता पूर्ण व मार्मिक है। हनुमान ने वचन देते हुये वानर सेना को एकत्र कर सीता को वापस लाने की प्रतिज्ञा की। राम के युद्ध कौशल और हनुमान जी की शक्ति ने राम रावण के युद्ध का परिणाम ये हुआ की अधिकांश राक्षस तो मारे ही गये पर रावण का भी अंत हो गया। इस प्रकार राम रावण के इस युद्ध के साथ राम के चौदह वर्ष के वनवास का अंत भी हा गया। ई के साथ राम के पुष्पक विमान से अयोध्या वापस जाने व राज्याभिषेक की तैयारी आदि की परिस्थिति निर्मित हो गयी ।[5]

निष्कर्ष

निष्कर्ष ये है कि राम का वनगमन रामचिरतमानस मे विभक्त अनेक काण्डों में से एक महत्वपूर्ण, अविस्मरणीय ,रोचक व प्रभावशाली घटनाओं का क्रम है। जो घूम फिरकर राम को वापस राज्यगद्दी दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है। यहां ये भी प्रश्न है कि राम का वनगमन जाना क्या रावण के उद्धार होने से जुड़ा हुआ है। शायद हां अगर राम का वनगमन न होता तो सीता हरण भी न होता, और सीता हरण न होता तो रावण के पूरे परिवार का उद्धार कैसे हो पाता । साधु संतों को राक्षसों से मुक्ति कैसे मिल पाती। देखा जाए तो रामचरितमानस मे समाज, राजनीति, आदि की अनेक चर्चा दृष्टिगत होती है। यह एक ऐसा धर्मिक ग्रन्थ है, जिसमे राम की भक्ति की प्रतिष्ठा की गयी है। राम का वनगमन राम की दशा व दिशा को निर्धारित करता है।[6]

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. श्री रामचरितमानस, गीता प्रेस गोरखपुर, पृष्ठ 22, 28, 30
2. श्री रामचरितमानस, प्रकाशन केन्द्र लखनऊ, उत्तर प्रदेश पृष्ठ 55, 58
3. कवितावली , अशोक प्रकाशन, नई सड़क दिल्ली पृष्ठ 96
4. आज तक मासिक साहित्यिक पत्रिका , जनवरी 2015 पृष्ठ 96
5. रचना हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल मार्च 2016 पृष्ठ 58
6. स्वयं का सर्वेक्षण व निष्कर्ष।